॥ श्रीः ॥

स्वप्नप्रकाशिका।

पाठकज्ञातीयमाथुर–श्रीकृष्णलालतनय

दत्तरामसंकलिता तत्कृत

भाषाटीकासहिता।

सैव

क्षेमराज श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

खेतवाड़ी ७ वीं गली खम्बाटा लेन,

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् यन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशिता।

संवत् १९७२, शाके १८३७.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन, निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें अपने लिये छापकर यहाँ प्रकाशित किया।

॥ श्रीः ॥

स्वप्नप्रकाशिका ।

पाठकज्ञातीयमाथुर–श्रीकृष्णलालतनय-

दत्तरामप्रकाशिता तत्कृत-

भाषाटीकासहिता ।

क्षेमराज श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

(खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन,)

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् यन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशिता ।

संवत् १९७२, शके १८३७.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन, निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया ।

अथ स्वप्नप्रकाशिकाविषयाऽनुक्रमणिका ।

॥ इति स्वप्नप्रकाशिकाविषयाऽनुक्रमणिका ॥

श्रीशं वन्दे ।

॥ श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ॥

अथ स्वप्नप्रकाशिका.

भाषाटीकासहिता ।

स्वप्नाधिपं हरिं नत्वा स्वप्नविज्ञानहेतवे ।
स्वप्नप्रकाशिकां वक्ष्ये सर्वचित्तानुगामिनीम् ॥ १ ॥

अर्थ—स्वप्नाधिप श्रीहरिको नमस्कार कर स्वप्नविज्ञानके लिये सबके चित्तमें गमन करनेवाली अर्थात् सबको प्रिय ऐसी "स्वप्नप्रकाशिका" को कहते हैं ॥

स्वप्नानतः प्रवक्ष्यामि शुभाय मरणाय च ।
सुहृदो यांश्च पश्यंति व्याधितो वा स्वयं तथा ॥२॥

अर्थ—अब मैं स्वप्नोंको कहूंगा जिनको मरणके अर्थ अथवा अच्छा होनेके अर्थ रोगीके सुहृद् अथवा स्वयं रोगी देखता है ॥

सप्तविधः स्वप्नः ।

दृष्टः श्रुतोऽनुभूतश्च प्रार्थितः कल्पितस्तथा ।
भाविको दोषजश्चैव स्वप्नः सप्तविधो मतः ॥ ३ ॥

अर्थ—तहां कहते हैं कि, स्वप्न सात प्रकारका है। १ दृष्ट (जो दिनमें देखा हो उसको रात्रिको स्वप्नमें देखे.) २ श्रुत (जो बात सुनी हो उसीको स्वप्नमें देखे.) ३ अनुभूत (जो बात जाग्रत अवस्थामें अनुभव करी हो उन्हीको स्वप्नमें देखे.) ४ प्रार्थित (जो वस्तुकी जाग्रत् अवस्थामें इच्छा की हो उसीको स्वप्नमें देखना.) ५ कल्पित (जो दिनमें किसी वस्तुकी कल्पना करे वो स्वप्नमें देखे.) ६ भाविक (जो दृष्टश्रुतसे विलक्षण देखे और उसको उसका वैसाही फल हो उसको

भाविक जानना. ७ दोषज अर्थात् वात पित्त कफ इनकी प्रकृतिके अनुसार स्वप्न दीखना ॥

तत्र पञ्चविधं पूर्वमफलं भिषगादिशेत् ।
दिवास्वप्नमतिह्रस्वमतिदीर्घं च बुद्धिमान् ॥ ४ ॥
दृष्टः प्रथमरात्रे यः स्वप्नः सोऽल्पफलो भवेत् ।
न स्वप्याद्यं पुनर्दृष्ट्वा स सद्यः स्यान्महाफलः ॥ ५ ॥

अर्थ–तिन दृष्टादिक सात स्वप्नोंमें प्रथमके पांच स्वप्नोंको वैद्य निष्फल कहे । तथा दिनका स्वप्न एवं अति छोटा अथवा अत्यंत बडा स्वप्नको भी वैद्य निष्फल जाने और जो स्वप्न प्रथमरात्रिमें देखा हो वह अल्पफलको देता है । जिस स्वप्नको देखकर फिर न सोवे वह स्वप्न शीघ्र महाफलको देता है ॥

"१ वाग्भट लिखते हैं कि जो प्रकृतिसंबंधि स्वप्न अर्थात जैसे दोषकी प्रकृति हो उसी प्रकारका स्वप्न देखाहुआ भी निष्फल है । जैसे वातप्रकृतिवाला वातप्रकृतिके अनुरूप स्वप्न देखे । पित्तप्रकृतिवाला पित्तप्रकृतिके और कफप्रकृति कफप्रकृतिके एवं द्वंद्वज और त्रिदोषज जो द्वंद्वजके और त्रिदोषज प्रकृतिके अनुरूप स्वप्न देखे तो निष्फल है और जिस स्वप्नको देखा उसकी विस्मृति होजावे वोभी निष्फल है शेष समान है ॥"

मनोवहानां पूर्णत्वाद्दोषैरतिबलैस्त्रिभिः ।
स्रोतसां दारुणान्स्वप्नान्काले पश्यत्यदारुणान् ॥ ६ ॥

अर्थ–मनोवह अर्थात् मनके बहनेवाली नाडियोंके छिद्र जिससमय अतिबली तीनो दोषोंमें पूर्ण होजाते हैं उस कालमें यह मनुष्य दारुण (खोटे) और अदारुण (शुभ) स्वप्नोंको देखता है ॥

---

१ तेष्वाद्या निष्फलाः पञ्च यथा स्वप्रकृतिर्दिवा । विस्मृतो दीर्घस्वप्नोऽतिपूर्वरात्रे चिरात्फलम् ॥ दृष्टः करोति तुच्छं च गोसर्गे तदहर्महत् । निद्रया चानुपहतः प्रतीपैर्वचनैस्तथा ॥

नातिप्रसुप्तः पुरुषः सफलानफलानपि ।
इंद्रियेशेन मनसा स्वप्नान्पश्यत्यनेकधा ॥ ७ ॥

अर्थ-जिससमय यह पुरुष न अत्यंत सोता हो और न जागता हो उससमय इन्द्रियोंके अधिपति मनकरके सफल और निष्फल अनेक प्रकारके स्वप्नोंको देखता है। जिसमें स्वप्न देखता है उस अवस्थाको "स्वप्नावस्था" कहते हैं ॥

तथाच ग्रन्थान्तरे ।

सर्वेन्द्रियाणां विरतौ मनोऽनुपरतं यदि ।
विषयेभ्यस्तदा स्वप्नं नानारूपं प्रपश्यति ॥ ८ ॥

अर्थ-और ग्रंथान्तरोंमें भी लिखा है कि, जिससमय संपूर्ण इन्द्रियें और मन विषयोंसे उपरामको प्राप्त होते हैं तब यह प्राणी अनेक प्रकारके भले बुरे स्वप्नोंको देखता है ॥

तत्रादौ रोगभाविस्वप्नाः ।

श्वभिरुष्ट्रैः खरैर्वापि याति यो दक्षिणां दिशम् ।
स्वप्ने यक्ष्मा तमाविश्य न जीवन्नवसृज्यते ॥ ९ ॥

अर्थ-तहां प्रथम रोग होनहार स्वप्नोंको कहते हैं। जो मनुष्य स्वप्नमें कुत्ता, ऊंट और गधेपर चढके दक्षिणदिशाको जाता है, उसको राजयक्ष्माका रोग आकर मारता है ॥

रक्तपित्तसंभवे ।

लाक्षारक्तांबराभं यः पश्यत्यम्बरमंतिकात् ।
स रक्तपित्तमासाद्य तेनैवांताय नीयते ॥ १० ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें लाख और लाल वस्त्रके समान आकाशको देखता है वह रक्तपित्तरोगोंको प्राप्त हो और उसी रक्तपित्तसे मरणको प्राप्त होता है ॥

रक्तरोगे ।

रक्तस्रग्रक्तसर्वांगो रक्तवासा मुहुर्हसन् ।
यः स्वप्ने ह्रियते नार्या स रक्तं प्राप्य सीदति ॥ ११ ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें लाल फूलमाला और अपने संपूर्ण अंगोंको लाल और लाल वस्त्रोंको धारण करता, वारंवार हँसता एवं जिसको स्वप्नमें लालवस्त्र धारण करनेवाली स्त्री खींचती है वह रुधिरके रोगसे मरता है ॥

गुल्मरोग ।

शूलाटोपान्त्रकूटाश्च दौर्बल्यं चातिमात्रया ।
नखादिषु च वैवर्ण्यं गुल्मेनांतकरो नरः ॥ १२ ॥

अर्थ-जिस मनुष्यके स्वप्नमें शूलरोग, अफरा, आंतोका रोग, अत्यंत दुर्बलताका रोग और जिसके नख दुष्टरंगके होजांय उस मनुष्यकी मृत्यु गुल्मरोगसे होती है ॥

लता कण्टकिनी यस्य दारुणा हृदि जायते ।
स्वप्ने गुल्मस्तमन्ताय क्रूरो विशति मानवम् १३॥

अर्थ-जिस स्वप्नमें मनुष्यके हृदयमें घोर कांटेवाली लता (वेल) उत्पन्न होय उस मनुष्यके मारनेको क्रूर गुल्मरोग उसकी देहमें प्रवेश करता है ॥

कुष्ठरोगे ।

कायेऽल्पमपि संस्पृष्टं सुभृशं यस्य दीर्यते ।
क्षतानि च नरो हंति कुष्ठैर्मृत्युर्हिनस्ति तम् ॥१४॥
नग्नस्याज्यावसिक्तस्य जुह्वतोऽग्निमनर्चिषम् ।
पद्मान्युरसि जायन्ते स्वप्ने कुष्ठैर्मरिष्यतः ॥ १५ ॥

अर्थ-जिसकी देह नेकभी स्पर्श करनेसे फँसजावे और घाव होजावे वा मनुष्य कुष्ठकरके मरण पाताहै । यह जाग्रत् अवस्थामें जानना-और यही मनुष्य स्वप्नमें नग्न हो घृतको देहमें लगावे और ज्वाला-सहित अग्निमें हवन करे तथा उसके हृदयमें कमल प्रगट होय वो कुष्ठकरके मरेगा ऐसा जानना ॥

प्रमेहरोगे ।

स्नातानुलिप्तगात्रेऽपि यस्मिन्गृध्यंति मक्षिकाः ।
स प्रमेहेण संस्पर्शं प्राप्य तेनैव हन्यते ॥ १६ ॥
स्नेहं बहुविधं स्वप्ने चांडालैः सह यः पिबन् ।
बध्यते स प्रमेहेण स्पृश्यंतेऽन्ताय माधवः ॥ १७ ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्नान करचुका हो और तैल आदिका मालिस करचुका हो तथापि उसकी देहमें मक्खी आनकर बैठे, वह मनुष्य प्रमेहरोगको प्राप्त हो और उसी प्रमेहरोग करके मारा जाता है, यह जाग्रत अवस्थामें जानना । अब कहतेहैं कि, वही मनुष्य स्वप्नमें चांडाल भंगी डोम आदि के साथ अनेक प्रकारके घृत तैलादि स्नेहका पान करताहै वो प्रमेह करके मरताहै । उसको. मधुप्रमेह होताहै ॥

उन्मादरोगे ।

ध्यानायामस्तथोद्वेगश्चोहश्च स्थानसम्भवः ।
अरतिर्बलहानिश्च मृत्युरुन्मादपूर्वकः ॥ १८ ॥
आहारद्वेषिणं पश्यन् प्लुतचित्तमुदर्दितम् ।
विद्याद्धीमान मुमूर्षुं तमुन्मादेनातिपातिनम् ।
क्रोधनं त्रासबहुलं हन्त्युन्मादः शरीरिणम् ॥ १९॥
नृत्यं रक्षोगणैः साकं यः स्वप्नेऽम्भसि सीदति ।
स प्राप्य भृशमुन्मादं याति लोकमतः परम् ॥२०॥

अर्थ–एक ठिकाने बहुत देरीतक ध्यानका लगजाना, मनमें उद्वेग और तर्क वितर्क, सर्व वस्तुमात्रमें तर्क करे अरति और बलहानि ये लक्षण उन्मादरोग होनेवाले रोगीके हैं वह इसी रोगसे मरे । जो मनुष्य भोजन नहीं करे, निमग्न नित्यसे देखे, तथा आनंदमे पीडित चित्त जिनका अर्थात् अत्यंत आनंदित रहे, एवं जो अत्यंत क्रोधी और जिसको अत्यंत त्रास होय वह अतिप्रबल उन्मादरोगमे मरनेवाला जानना । ये जाग्रत् अवस्थाके चिह्न हैं और जिस मनुष्यके ये जाग्रत् अवस्थाके चिह्न हों वह स्वप्नमें राक्षसोंके समूहोंकरके नाचताहुआ जलमें डूबजावे । वह उन्मादरोगको प्राप्त हो मृत्युको प्राप्त होताहै ।

असत्तमः पश्यति यः शृणोत्यप्यसतः स्वरान् ।
बहून्बहुविधाञ्जाग्रत्सोऽपस्मारेण वध्यते ॥ २१ ॥
मत्तं नृत्यंतमाविध्य प्रेतो हरति यं नरम् ।
स्वप्ने हरति तं मृत्युरपस्मारपुरःसरः ॥ २२ ॥

अर्थ–जो मनुष्य जाग्रत अवस्थामें अकस्मात् अनेक प्रकारके भयानक दुष्टस्वरूपोंको देखे और अनेक प्रकारके दुष्टशब्दोंको सुने वो अपस्मार (मृगी) रोग प्रगट होकर और इसी रोगमें माराजाय एवं यही मनुष्य स्वप्नमें उन्मत्त हो नाचने लगे उस नाचते हुएको मृतपुरुष बांधकर लेजाय वो अपस्मारकरके मरे इसमें सन्देह नहीं ॥

स्तम्भेते प्रतिबुद्धस्य हनुमन्ये तथाक्षिणी ।
यस्य तं बहिरायामो गृहीत्वा हंत्यसंशयम् ॥२३॥

अर्थ–जिस जागते पुरुषके ठोडी मन्या नाडी, और नेत्र ये स्तंभित होजावें उसको बहिरायाम (वादीका रोग) होकर निश्चय मारता है ॥

शष्कुलीरप्यपूपान्वै स्वप्ने खादति यो नरः ।
स चेत्तादृक्छर्दयति प्रतिबुद्धो न जीवति ॥ २४ ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें पूडी, पूआ खायकर फिर उसी प्रकार उलटी करदे और जागपडे तो वो नहीं जीवै ॥

अनेक रोगोंमें विविधस्वप्न ।

ज्वरितानां शुना सख्यं कपिसख्यन्तु शोषिणाम् ।
उन्मादे राक्षसैः प्रेतैरपस्मारे प्रवर्त्तनम् ॥ २५ ॥
मेहातिसारिणां तोयपानं स्नेहस्य कुष्ठिनाम् ।
गुल्मेषु स्थावरोत्पत्तिः कोष्ठे मूर्ध्नि शिरोरुजि २६॥
शष्कुलीभक्षणं छर्द्यामध्वा श्वासपिपासयोः ॥
हारिद्रं भोजनं वापि यस्य स्यात्पाण्डुरोगिणः ॥
रक्तपित्ती पिबेद्यश्च शोणितं स विनश्यति ॥ २७॥

अर्थ-स्वप्नमें ज्वर होनेवाले मनुष्योंकी कुत्तेके साथ प्रीति होती है । जिनके शोषरोग होनेवाला हो उनकी वंदरोंके साथ प्रीति होती है उन्माद होनेवालेकी राक्षसोंके साथ, अपस्मार (मृगी) रोग होनेवाले-की प्रेतोंके साथ प्रीति होती है ॥ प्रमेह रोगवाले और अतिसारी स्वप्नमें जल पीते हैं । कुष्ठ होनेवाले तेल पीते हैं । गुल्मरोग होनेवालोंके कोठेमें और मस्तकपर वृक्षोत्पत्ति हो । मस्तकरोग और छर्दिरोग होनेवाला मनुष्य चनेकी तिलमिली पूडी खाताहै । और श्वास रोग तथा प्यासरोगवाला मार्ग चलताहै । पांडुरोग होनेवाला हलदी मिले पदार्थ खाताहै । और जो रक्तपित्ती स्वप्नमें रुधिर पीता है वो अवश्य मरण पावे ॥

एतानि पूर्वरूपाणि यः सम्यगवबुध्यते ।
स एषामनुबन्धञ्च फलञ्च ज्ञातुमर्हति ॥ २८ ॥
इमांश्चाप्यपरान्स्वप्नान् दारुणानुपलक्षयेत् ।
व्याधितानां विनाशाय क्लेशाय महतेऽपि वा॥२९॥

अर्थ–जो पुरुष इन रोगोंके पूर्वरूपोंको उत्तमरीतिसे जानता है वह इन दुष्ट पूर्वरूपोंका यत्न और इनके फलको भी जानता है । इस प्रकार यह मनुष्य इनको और अन्य दुष्ट स्वप्नोंको रोगीकी मृत्युके अर्थ अथवा घोर कष्टके लिये देखता है ॥

अथान्याशुभस्वप्नाः ।

यस्योत्तमांगे जायन्ते वंशगुल्मलतादयः ।
वयांसि च विलीयंते स्वप्ने मौंड्यमियाच्च यः ३०॥
गृध्रोलूकश्वकाकाद्यैः स्वप्ने यः परिवार्यते ॥ ३१ ॥

अर्थ–अब अन्य अशुभ स्वप्नोंको कहते हैं । जैसे कि, जिसके मस्तकपर बांसका वृक्ष, गुल्म (छोटा जवासेके सदृश वृक्ष) और लता प्रगट हो और जिसके देहमें पक्षी प्रवेश करे तथा स्वप्नमें मुंडित होकर गमन करे और जिसको गीध उल्लू कुत्ता और कौआ आदि त्रास देवे ॥

रक्षःप्रेतपिशाचस्त्रीचांडालद्रमिडादिकैः ।
वंशवेत्रलतापाशतृणकण्टकसंकटे ॥ ३२ ॥
प्रमुह्यति हि यः स्वप्ने लगति प्रपतत्यपि ।
भूमौ पांसूपधानायां वल्मीके वाथ भस्मनि॥३३॥
श्मशानायतनश्वभ्रे स्वप्ने यः प्रपतत्यपि ।
कलुषेऽम्भसि पंके वा कूपे वा तमसावृते ।
स्वप्ने मज्जति शीघ्रेण स्रोतसा ह्रियते च यः॥३४॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें राक्षस, प्रेत पिशाच, स्त्री, चांडाल, द्रमिडादिकोंकरके बांस, बेत, लता, फांस तिनका और कांटेके संकटमें मोहित हो, लगकर गिरपडे, तथा रेतली पृथ्वीमें तथा सर्पकी बांबीमें राखमें, श्मशानमें, देवस्थानोंमें गड्ढेमें, दुष्ट जलमें, कीचमें, अंधेरे कूएमें गिरे और पानीके वेगकरके जो हरण करा जाय अर्थात् बहजावे॥

स्नेहपानं तथाभ्यङ्गः प्रच्छर्दनविरेचने ॥ ३५ ॥
हिरण्यलाभः कलहः स्वप्ने बन्धपराजयौ ।
उपानद्युगनाशश्च प्रपातः पांसुचर्म्मणोः ॥ ३६ ॥
हर्षः स्वप्ने प्रकुपितैः पितृभिश्चावभर्त्सनम् ।
दन्तचन्द्रार्कनक्षत्रदेवतादीपचक्षुषाम् ॥ ३७ ॥
पतनं वा विनाशो वा स्वप्ने भेदो नगस्य वा ।

अर्थ-स्वप्नमें तेलका पीना, तथा देहमें लगाना, उलटी करना, दस्त होना, तथा सुवर्णका मिलना, कलह होना, बंधनमें पडना और हारना, जोडियोंका नाश, पाम, और चमडेका गिरना, तथा स्वप्नमें खुशी होना और कुपित हुए पित्रीश्वरोंकरके ललकारा जाना, दांत, चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, देवता, दीपक और नेत्र इनका गिरपडना अथवा नाश होना तथा पर्वतका टूटना ।

रक्तपुष्पं वनं भूमिं पापकर्मालयां चिताम् ॥ ३८ ॥
गुहान्धकारं संबाधं स्वप्ने यः प्रविशत्यपि ।
रक्तमाली हसन्नुच्चैर्दिग्वासा दक्षिणां दिशम् ॥ ३९ ॥
दारुणामटवीं स्वप्ने कपियुक्तेन याति वा ।

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें लालपुष्प, वन, पृथ्वी, हिमाघर, गुफा और अंधकार इनमें प्रवेश करे तथा लाल मालाको पहन खिलखिलायके हँसता, नंगा हो, दक्षिणदिशाको जाय अथवा बंदरको साथ लेकर दारुण वनोंमें प्रवेश करे ।

कषायिणामसौम्यानां नग्नानां दण्डधारिणाम् ॥ ४० ॥
कृष्णानां रक्तनेत्राणां स्वप्ने नेच्छंति दर्शनम् ।
कृष्णा पापा निराचारा दीर्घकेशनखस्तनी ॥ ४१ ॥
विरागमाल्यवसना स्वप्ने कालनिशा मता ।

इत्येते दारुणाः स्वप्ना रोगी यैर्याति पञ्चताम्॥४२॥
अरोगः संशयं गत्वा कश्चिदेव विमुच्यते ।

अर्थ–कोंगडाको हाथमें लिये, भयंकर रूपवाले, नग्न, दंडको धारण करनेवाले, काले, लाल नेत्रवाले पुरुषोंका स्वप्नमें दर्शन होना अशुभ है। काली, पापिष्ठ, अमंगल आचरणवाली तथा केश, नख और स्तन जिसके लम्बे होयँ और दुष्ट रंगकी माला तथा वस्त्रोंको धारण करनेवाली ऐसी स्त्रीका स्वप्नमें दीखना कालरात्रि जानना। ये दारुण स्वप्न हैं यदि रोगी देखे तो मृत्युको प्राप्त हो, ऐसे और रोगी पुरुष देखे तो संशयको प्राप्त हो दुष्टस्वप्नोंमें कोईभी पुण्यवान् पुरुष बचता है॥

तथाच सुश्रुते ।

स्नेहाभ्यक्तशरीरस्तु करभव्यालगर्दभैः ॥ ४३ ॥
वराहैर्महिषैर्वापि यो यायाद्दक्षिणामुखः ।
रक्तांबरधरा कृष्णा हसन्ती मुक्तमूर्धजा ॥ ४४ ॥
यं वा कर्षति बद्ध्वा स्त्री नृत्यन्ती दक्षिणामुखम् ।
अंत्यावसायिभिर्यो वाकृष्यते दक्षिणामुखः ॥४५॥
परिष्वजेरन् यं वापि प्रेताः प्रव्रजितास्तथा ।

अर्थ- अब सुश्रुतके मतमें दुष्ट स्वप्न कहतेहैं, जैसे कि, देहमें तेलका लगाना तथा ऊंट, सर्प, गधा, सूकर और भैसा इनपर बैठकर जो दक्षिणदिशाको जाय तथा लालवस्त्रके धारण करनेवाली काले बाल जिसके खुल रहे ऐसी स्त्री हँसती नाचती जिस मनुष्यको बाँधकर दक्षिणदिशाको घसीटे अथवा जो चांडालोंकरके दक्षिणदिशाको घसीटा जावे अथवा जिसको मृतपुरुष और संन्यासी आलिंगन करे ॥

मूर्द्धन्याघ्रायते यस्तु श्वापदैर्विकृताननैः ॥ ४६ ॥
पिबेन्मधु च तैलञ्च यो वा पंकेऽवसीदति ।

पंकप्रदिग्धगात्रो वा प्रनृत्येत्प्रहसेत्तथा ॥ ४७ ॥
निरम्बरश्च यो रक्तां धारयेच्छिरसि स्रजम् ॥

अर्थ–स्वप्नमें जिसके मस्तकको बिकराल मुखके कुत्ते सूँघें और जो महत, तैल पीवे अथवा कीचमें डूबजावे अथवा जिसके संपूर्ण अंगोमें कीच लगजावे, नांचे, हँसे, तथा नग्न हो मस्तकपर लाल पुष्पकी माला धारण करे ॥

यस्य वंशो नलो वापि तालो वोरसि जायते४८॥
यं वा मत्स्यो ग्रसेद्यो वा जननीं प्रविशेन्नरः।
पर्वताग्रात्पतेद्यो वा श्वभ्रे वा तमसावृते ॥ ४९ ॥
ह्रियते स्रोतसा यो वा यो वा मौढ्यमवाप्नुयात्।
पराजीयेत बध्येत काकाद्यैर्वाभिभूयते ॥ ५० ॥

अर्थ–स्वप्नमें जिसकी छातीमें बाँसका, नरसलका अथवा ताडका वृक्ष उत्पन्न हो तथा जिसको मछली निगलजावे, अथवा अपनी मातामें प्रवेश करजावे. पर्वतके अग्रभागसे अन्धकारयुक्त गड्ढेमें गिरे, अथवा पानीके वेगसे बहिजावे,वा मुंडन हो, तथा शत्रुसे पराजित हो,वा बंधनको प्राप्त हो, एवं जो काक (चील गीध घूघू) आदिसे पीडित होवे ॥

यः पश्येद्देवतानां वा प्रकम्पमवनेस्तथा।
शाल्मलीकिंशुकं यूपं वल्मीकं पारिभद्रकम्॥५१॥
पुष्पाढ्यं कोविदारं वा चितां यो वाधिरोहति।
कार्पासतैलपिण्याकलोहानि लवणं तिलान्॥५२॥
लभेताश्नाति वा पक्वमन्नं यश्च पिबेत्सुराम्।
स्वस्थः स लभते व्याधिं व्याधितो मृत्युमृच्छति५३॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें देवप्रतिमाको और पृथ्वीको हिलती देखे तथा सेमरका वृक्ष, ढाकका वृक्ष, यूप (यज्ञमें पशु मारनेका स्तंभ)

बॅमई, नीमका वृक्ष और फलेहुए कचनारके वृक्षको देखे अथवा अपनेको चितामें बैठा, देखे तथा कपास. तेल, खल, लोहेके पदार्थ, नोन, तिल ये प्राप्त होंय अथवा पक्का अन्न (पूडी. कचोंडी आदि लड्डू आदि) को स्वप्नमें भक्षण करे, दारू पिवे इत्यादि स्वप्नमें स्वस्थ पुरुष रोगी हो और रोगी पुरुषका मृत्यु होय ॥

विष्णुपुराण ।

देवद्विजादिभूपानां प्रजानां क्रोध एव च ।
आलिंगनं कुमारीणां प्राणिनां चैव मैथुनम्॥५४॥
हानिश्चैव स्वगात्राणां वीरकण्ठमनःप्रियान् ।
दक्षिणाशाभिगमनं व्याधिनाभिभवस्तथा ॥ ५५ ॥
फलापहारश्च तथा शाड्वलानां विशोधनम् ।
काषायवस्त्रधारित्वं तद्वत्क्रीडनके तथा ॥ ५६ ॥
स्नेहपानावगाहौ च रक्तं माल्यानुलेपनम् ।
एवमादीनि चान्यानि दुःस्वप्नानि विनिर्दिशेत्५७॥

अर्थ–विष्णुपुराणमें लिखा है कि, स्वप्नमें देव ब्राह्मण आदिका, राजाका और प्रजाका क्रोधित होना, कुमारी (कन्याओंको आलिंगन करना, पशु आदि प्राणियोंका मैथुन देखना, अपने देहकी हानि, वीर, कंठ और मनवांछित पदार्थोंका नाश देखना, अपनेको दक्षिणदिशामें जाताहुआ देखे. तथा रोगसे आक्रांत देखे, फलोंका हरण. घासका काटना. तथा गेरुआ कपडे पहने, उसी प्रकार अपनेको खेलता तेल पीता, तेलसे स्नान करता, लाल पुष्पमाला और लालचंदन धारण करे हुए देखना, इनसे आदिले और बहुतसे दुःस्वप्न जानने चाहिये ॥

वराहः ।

हरिणारोहे भ्रमणं मृत्युर्न चिरेण सूकरारोहे ।
उष्ट्रारोहे व्याधिर्वृद्धिः स्यात्कुंजरारोहे ॥ ५८ ॥

अर्थ-वराहमिहिर लिखते हैं कि, स्वप्नमें हरिणीके ऊपर अपनेको बैठा देखे तो भ्रमण करे और शूकरके ऊपर बैठा देखे तो थोडेही कालमें मृत्यु हो. उसी प्रकार ऊंटपै बैठनेसे रोग और हाथीपर बैठनेसे कुटुंबवृद्धि होय ॥

मार्कण्डेयः ।

वांत्या मूत्रपुरीषं तु सुवर्णं रजतं तथा ।
प्रत्यक्षमथवा स्वप्ने जीवेत दशमासिकम् ॥ ५९ ॥
लोहदंडयुतं कृष्णं नरं कृष्णपरिच्छदम् ।
स्वप्ने च पार्श्वतो दृष्ट्वा त्रिरात्रान्मृत्युमादिशेत् ॥ ६० ॥

अर्थ-मार्कंडेय ऋषि लिखते हैं कि, जो मल, मूत्र, सुवर्ण और चांदीको वमनको जागते अथवा स्वप्नमें देखे वह मनुष्य दश महीने जीवे । जो मनुष्य स्वप्नमें लोहदंडका धारण करनेवाला और संपूर्ण परिच्छद (हाथी घोडा आदि) जिसके काले हों ऐसे पुरुषको अपने पास खडा देखे वो तीन रात्रिमें मरेगा ऐसा जानना ॥

करालैर्विकटैः कृष्णैः पुरुषैरुद्यतायुधैः ।
पाषाणैस्ताडयते स्वप्ने सद्यो मृत्युं लभेन्नरः ॥ ६१ ॥

अर्थ-जो स्वप्नमें कराल, विकट, काले पुरुष, हाथमें शस्त्र ले रक्खे हो तथा पत्थर मारते हो ऐसा देखे वो शीघ्र मरे ॥

रक्तकृष्णाम्बरधरा गायन्ती हसती तथा ।
दक्षिणाशां नयेन्नारी स्वप्ने सोऽपि न जीवति ॥ ६२ ॥

अर्थ-लाल अथवा काले वस्त्रके धारण करनेवाली स्त्री गाती हँसती जिसको स्वप्नमें दक्षिणदिशाको लेजावे वो मनुष्य नहीं जीवे ॥

यस्तु प्रावरणं शुक्लं स्वप्ने पश्यति मानवः ।
कृष्णरक्तमपि स्वप्ने तस्य मृत्युरुपस्थितः ॥ ६३ ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें अपने ओढने बिछानेके वस्त्रोंको सफेद वा काले और लाल देखे उसकी मृत्यु उपस्थित है ऐसा जानना ॥

श्वभ्रे यो निपतेत्स्वप्ने द्वारं चास्य पिधीयते ।
न चोत्तिष्ठति यस्तस्मात्तदन्तं तस्य जीवितम् ६४॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें गड्ढेमें गिरपडे जिसके घरके किवाँड लगजावें वो पुरुष जबतक शय्यासे नहीं उठे तबतक ही उसका जीवन है ऐसा जानना ॥

रक्तगंधप्रलिप्ताङ्गो रक्तमाल्योपशोभितः ।
तैलाभ्यक्तोऽतिपीतश्च मुंडितो रक्तवस्त्रधृक् ॥ ६५ ॥
खरमारुह्य वेगेन दक्षिणां दिशमाव्रजेत् ।
स्वात्मा च दृश्यते स्वप्ने स याति यममन्दिरम् ६६॥

अर्थ-रक्तगंध और लालफूलोंकी माला जिसने पहिर रक्खी हो तथा तैलको लगावे तथा पीवे, मुंडित हो. लालवस्त्रको धारण कर गधेके ऊपर बैठे वेगसे दक्षिणदिशामें जाय, इसप्रकार जो मनुष्य अपने आपको स्वप्नमें देखे वह अवश्य यमराजके घरको पधारे ॥

दंता यस्य विशीर्यन्ते केशा यस्य पतन्ति च ।
धननाशो भवेत्तस्य व्याधिपीडाप्यसंशयम् ॥६७॥

अर्थ--जिस मनुष्यके स्वप्नमें दांत और बाल गिरजावें उसका धन-नाश और व्याधिपीडा होय ॥

अभिद्रवन्ति यं स्वप्ने शृङ्गिणो दंष्ट्रिणोऽथवा ।
वानरा वा वराहा वा तस्य राजकुलाद्भयम् ॥ ६८ ॥

अर्थ-स्वप्नमें जिसके पीछे सींगवाले (बैल, भैंसा, आदि) और डाढवाले (सिंह बघेरा कुत्ता आदि) और बंदर तथा सूअर दौडें, उसको राजकुलसे भय होय ॥

स्वप्नेऽभ्यक्तस्तु रजसा तैलेन च घृतेन च ।
स्नेहेन वा तथान्येन व्याधिं तस्य विनिर्दिशेत् ॥६९॥

अर्थ-जो स्वप्नमें धूल, वा तेल, तथा घीको देहमें लगाता है एवं और प्रकारका स्नेह (चरबी आदि) को लगाता है वह अवश्य रोगी होय ॥

रक्ताम्बरधरा नारी रक्तगंधानुलेपना ।
अवगूहति यं स्वप्ने तस्य मृत्युं विनिर्दिशेत् ॥७०॥

अर्थ-लाल वस्त्र और चंदनके धारण करनेवाली स्त्री जिस पुरुषका आलिंगन करे उसकी मृत्यु हो ॥

कृष्णाम्बरधरा नारी कृष्णगन्धानुलेपना ।
अवगूहति यं स्वप्नेऽकल्याणं तस्य निर्दिशेत् ॥७१॥

अर्थ-काले वस्त्र और काले चंदनको धारण करनेवाली स्त्री जिस पुरुषका आलिंगन करे उसका अकल्याण जानना ॥

स्वप्नेषु नग्नान्मुण्डांश्च रक्तकृष्णाम्बरावृतान् ।
व्यंगांश्च विकृतान्कृष्णान्सपाशान्सायुधानपि ॥७२॥
बध्नतो निघ्नतश्चापि दक्षिणां दिशमाश्रितान् ।
महिषोष्ट्रखरारूढान्स्त्रीपुंसोयस्तु पश्यति ।
सुस्वस्थो लभते व्याधिं रोगी यात्येव पञ्चताम् ॥७३॥

अर्थ-स्वप्नमें नंगे, मुंडित, लाल काले वस्त्रके धारण करनेवाले अंगहीन, विकराल, काले, फांसी और शस्त्रोंको लिये ऐसे पुरुष बांधते मारते दक्षिणदिशाको लेजाते, तथा भैंसा ऊंट और गधेपर चढेहुए स्त्री पुरुषको जो देखे वह निरोगी रोगी होय और जो रोगी है वह मृत्यु पावे॥

अधो यो निपतत्युच्चाज्जलेऽग्नौ वा विलीयते ।
श्वापदैर्हन्यते योपि मत्स्याद्यैर्गिलितो भवेत् ॥७४॥

यस्य नेत्रे विलीयेते दीपो निर्वाणतां व्रजेत् ।
तैलं सुरां पिबेद्वापि लोहं वा लभते तिलान् ॥७५॥
पक्वान्नं लभतेऽश्नाति विशेत्कूपं रसातलम् ।
स स्वस्थो लभते व्याधिं रोगी यात्येव पंचताम्॥७६॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें अपनेको पर्वतवृक्ष आदि ऊंचे स्थानसे गिरा हुआ देखे, तथा पानीमें डूबा हुआ, अग्निमें जला हुआ, तथा कुत्तोंने नखोंसे घायलकरा हुआ, मछलीकरके भक्षित, अकस्मात् नेत्र जाते रहे तथा अकस्मात् दीपक बुझा हुआ ऐसा देखे, तथा तैल, दारू इनको पीवे लोह, तिल, इनका लाभ होय तथा पक्वान्नका लाभ होकर उसको भोजन करे तथा कुआमें व पातालमें प्रवेश करे इसप्रकारके दुष्टस्वप्न देखनेसे जिसकी प्रकृति स्वस्थ है उसको रोग होय और जो रोगी है वह मरे ॥

दुःस्वप्नानेवमादीन्वै दृष्ट्वा ब्रूयान्न कस्यचित ।
स्नानं कुर्यादुषस्येव दद्याद्धेमतिलानयः ॥ ७७ ॥
पठेत्स्तोत्राणि देवानां रात्रौ देवालये वसेत् ।
कृत्वैवं त्रिदिनं मर्त्यो दुःस्वप्नात्परिमुच्यते ॥७८॥

अर्थ–पूर्वोक्त नग्नमुंडादि दुष्टस्वप्नको देखकर किसीसे न कहे और प्रातःकाल स्नानकर सुवर्ण और तिलका और लोहका दान करे, फिर दुष्ट स्वप्नको नाशकर्त्ता ऐसे देवताओंके विष्णुसहस्रनामादि स्तोत्रोंका पाठ करे। इसप्रकार दिनमें करे रात्रिमें देवमन्दिरमें स्थित हो जागरण करे इसप्रकार तीनदिन करनेसे मनुष्य दुःस्वप्नके फलसे छूट जाता है।

ग्रन्थान्तरे च ।

स्तुतिश्च वासुदेवस्य तथा तस्य च पूजनम् ।
नागेन्द्रमोक्षश्रवणं ज्ञेयं दुःस्वप्ननाशनम् ॥ ७९ ॥

अर्थ–और भी ग्रन्थान्तरोंमें लिखा है कि, श्रीवासुदेवकी स्तुति तथा श्रीवासुदेव भगवान्‌का पूजन और गजेन्द्रमोक्षका श्रवण करनेसे दुःस्वप्नका फल नष्ट होता है ।

पराशरस्मृतौ ।

देवद्विजाग्निप्रतिपूजनानि मंत्रोपवासादिपवित्रमेव । तिलान्नगोभूमिहिरण्यदानं दुःस्वप्नसंदर्शननाशनानि ॥ ८० ॥ अथाम्बुसंस्पर्शनमंत्रहोमतिलप्रदानं तपनं च भूयः । शांतिर्जपो होमअथान्नदानं दुःस्वप्नहन्तॄणि पयश्च गांगम् ॥ ८१ ॥

अर्थ-पाराशरस्मृतिमें लिखा है कि, देव ब्राह्मण और अग्नि इनका पूजन, गायत्र्यादि दिव्य मंत्रोंका जप करना, उपवासादि पवित्र कर्मोंका अनुष्ठान तथा तिल, अन्न, गौ पृथ्वी और सुवर्णका दान, ये सब दुःस्वप्न देखनेके फलको नष्ट करे हैं । इसीप्रकार जलोंका स्पर्श, मंत्रजपपूर्व होम, तिलदान, तप करना शांति करना, जप, होम, अन्नदान और श्रीभागीरथीगंगाके जलका सेवन दुःस्वप्नकी शांति करे है ।

सुश्रुते च ।

स्वप्नानेवंविधान्दृष्ट्वा प्रातरुत्थाय यत्नवान् । दद्यान्माषांस्तिलाँल्लोहं विप्रेभ्यः काञ्चनं तथा ॥ ॥ ८२ ॥ जपेच्चापि शुभान्मंत्रान्गायत्रीं त्रिपदां तथा । दृष्ट्वा च प्रथमे यामे सुप्याद्ध्यात्वा पुनः शुभम् ॥ ८३ ॥ जपेद्वान्यतमं देवं ब्रह्मचारी समाहितः । न चाचक्षीत कस्मैचिद्दृष्ट्वा स्वप्नमशो-

भनम् ॥८४॥ देवतायतने चैव वसेद्रात्रित्रयं त-
था। विप्रांश्च पूजयेन्नित्यं दुःस्वप्नात्परिमुच्यते॥८५॥

अर्थ–सुश्रुतमें लिखा है कि, पूर्वोक्त अशुभ स्वप्नको देखे तो प्रातः-काल उठकर यत्नपूर्वक ब्राह्मणोंको उडद, तिल, लोह और सुवर्णका दान करे। तथा शुभवैदिकमंत्रोंका तथा त्रिपदा गायत्री मंत्रका जप करे, यदि रात्रिके प्रथमप्रहरमें स्वप्न देखे तो शुभवस्तुका स्मरण कर फिर शयन करे। अथवा अपनी इच्छाके अनुसार चाहिये जिस देवताका ध्यानकरे और ब्रह्मचर्यमें रहना, दुष्टस्वप्नको किसीके आगे कहे नहीं और देवमंदिरमें तीनरात्रि जागरणकरे नित्य ब्राह्मणोंका पूजन कराकरे तो दुःस्वप्नसे छूट जावे।

चरकः ।

अकल्याणमपि स्वप्नं दृष्ट्वा तत्रैव यः पुनः ।
पश्येत्सौम्यं शुभाकारं तस्य विद्याच्छुभं फलम् ८६॥

अर्थ–चरकमें लिखा है कि, यदि यह प्राणी दुःस्वप्न देखे और उसीके पिछाडी शुभस्वप्न देखे तो उसका शुभही फल जानना।

अथ शुभस्वप्नानाह ।

अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि प्रशस्तस्वप्नदर्शनम् ।
देवद्विजान्गोवृषभाञ्जीवतः सुहृदो नृपान् ॥ ८७ ॥
समिद्धमग्निं विप्रांश्च निर्मलानि जलानि च ।
पश्येत्कल्याणलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥ ८८ ॥

अर्थ–अब इसके उपरान्त उत्तम स्वप्नदर्शनको कहते हैं। जैसे कि, देवता, ब्राह्मण, गौ, बैल, जीवते हुए अपने सुहृद्, राजा, देदीप्यमान अग्नि, विप्र और निर्मल जलोंको यह प्राणी कल्याणके लाभार्थ और व्याधिके दूर होनेके लिये देखता है ॥

मांसं मत्स्यान्स्रजः श्वेता वासांसि च फलानि च।
लभते धनलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥ ८९ ॥

अर्थ–मांस, मछली, श्वेतफूलमाला, श्वेतवस्त्र और फल इनको यह प्राणी स्वप्नमें धनके लाभार्थ और रोगके दूर होनेके लिये देखता है ॥

महाप्रासादसफलवृक्षवारणपर्वतान्।
आरोहेद्द्रव्यलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥ ९० ॥

अर्थ–बडा भारी मंदिर, सफल वृक्ष, हाथी और पर्वत, इनपर स्वप्नमें यह प्राणी द्रव्यलाभके और रोग दूर होनेके अर्थ चढता है ॥

नदीनदसमुद्रांश्च क्षुभितान्कलुषोदकान्।
तरेत्कल्याणलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥ ९१ ॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें बढेहुए नदी, नद, समुद्र, दूषित जलको तरता है, अर्थात् इनके पार जाता है, वो कल्याण, लाभ और रोगमुक्तिके अर्थ है ॥

उरगो वा जलौका वा भ्रमरो वापि यं दशेत्।
आरोग्यं निर्दिशेत्तस्य धनलाभं च बुद्धिमान्॥९२॥

अर्थ–जिस प्राणीको स्वप्नमें सर्प, जोंक, अथवा भौंरा, मक्खी काटे उसको आरोग्य और धनका लाभ बुद्धिमान् पुरुष कहे ॥

एवंरूपाञ्शुभान्स्वप्नान्यः पश्येद्व्याधितो नरः।
स दीर्घायुरिति ज्ञेयस्तस्मै कर्म समाचरेत् ॥ ९३ ॥

अर्थ–इसप्रकार जो रोगी मनुष्य शुभ स्वप्न देखता है उसकी दीर्घायु जाननी, इसकी चिकित्सा वैद्यको करनी चाहिये ॥

ग्रहनक्षत्रताराणां चन्द्रमंडलदर्शनम्।
भास्करोदयनं चैव प्रज्वलंतं हुताशनम् ॥ ९४ ॥

हर्म्येष्वारोहणं चैव प्रासादशिरसोऽपि वा ।
एवमादीनि संदृष्ट्वा नरः सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ १५ ॥

अर्थ–ग्रह, नक्षत्र, तारागण, चन्द्रमंडल, सूर्योदय, प्रज्वलित अग्नि, महलके ऊपर चढना, तथा मंदिरके ऊपर चढना इत्यादि अन्य शुभ स्वप्न देखनेसे प्राणीको सिद्धिकी प्राप्ति होती है ॥

स्वप्ने तु मदिरापानं वसामांसस्य भक्षणम् ।
कृमिविष्ठानुलेपं च रुधिरेणाभिषेचनम् ॥ १६ ॥
भोजनं दधिभक्तस्य श्वेतवस्त्रानुलेपनम् ।
रत्नान्याभरणादीनि स्वप्ने संदर्शनं शुभम् ॥ १७ ॥

अर्थ–स्वप्नमें मदिराका[१] पीना वसा (चरबी) मांसका भक्षण करना देहमें कृमि पडजावें तथा सर्व अंगमें विष्ठा लगी प्रतीतहो, तथा रुधिरसे स्नान दहीभातका भोजन सपेद वस्त्र और सपेद चंदनका लगाना तथा रत्न भूषण आदिका देखना शुभ है ॥

देवविप्रद्विजच्छत्रतुषपङ्कजपार्थिवान् ।
शुक्लपुष्पांबरधरां प्रशस्ताभरणाङ्गनाम् ॥ १८ ॥
वृषभं पर्वतंक्षीरफलवृक्षाधिरोहणम् ।
दर्पणामिषमाल्याप्तिस्तरणं च महाम्भसा ॥ १९ ॥
दृष्टुः स्वप्नेऽर्थलाभः स्याद्रोगमुक्तिश्च जायते ।

अर्थ–देवता, ब्राह्मण, द्विज (त्रिवर्ण) छत्र, तुष, कमल, राजा, सपेदपुष्प और सपेद आभूषणके धारणकरनेवाली स्त्री, बैल, पर्वत, दूध, फल जिनमें लग रहे ऐसे वृक्षोंपर चढना दर्पण, मांस और माला इनकी प्राप्ति होना, बडे भारी जलाशयके पार होना इत्यादि स्वप्नमें देखनेसे धनकी प्राप्ति हो और रोगसे मुक्ति होतीहै ॥

---

१ एकप्रकारकी अच्छीमदिरा होती है उसका स्वप्नमें पीना शुभ है ।

बृहद्यात्रायां वराहः ।

शैलप्रासादनागाश्च वृषभारोहणं हितम् ॥ १०० ॥
चन्द्रतारार्कग्रसनं परिमार्गण एव वा ।
भूम्यम्बुधीनां ग्रसनं शत्रूणां च वधक्रिया ॥ १०१ ॥
जयो विवाहद्यूतेषु संग्रामेषु तथा जयः ।
भक्षणं चैव मांसानां मत्स्यानां पयसस्तथा ॥ १०२ ॥
दर्शनं रुधिरस्यापि स्नानं वा रुधिरस्य च ।
सुरारुधिरमद्यानां पानं क्षीरस्य पायसम् ॥ १०३ ॥
अत्रैव वेष्टितं भूमौ निर्मलं गगनं तथा ।
मुखेन दोहनं शस्तं महिषीणां तथा गवाम् ॥ १०४ ॥
सिंहीनां हस्तिनीनां च वडवानां तथैव च ।
प्रसादो देवविप्राणां गुरूणां च तथा शुभः ॥ १०५ ॥
अम्भसा त्वभिषेकश्च ज्ञेयं राज्यप्रदं हितम् ।

अथ बृहद्यात्राग्रंथमें श्रीवराहमिहरका वाक्य है जैसे कि, स्वप्नमें पर्वत मन्दिर, हाथी, बैलों पर चढना । चंद्र, तारागण और सूर्यको ग्रसना । अथवा स्वप्नमें इनको ढूँढना, पृथ्वी और समुद्रको ग्रसना, शत्रुओंका वधकरना, विवाह और जुआ खेलनेमें जीत होना । लडाई वा कुश्तीमें जीत होना । मांस, मछली और दूधका भक्षण करना, रुधिरका देखना, तथा रुधिरमें स्नान करना, सुरा (दारू) मद्य, दूध और क्षीरका भोजन अथवा इन्हीं द्रव्य खीर आदिसे पृथ्वीमें लिहसजाना निर्मल आकाशका देखना, मुखसे गौ, भैंस, सिंहिनी, हथिनी, घोडी, आदिका दूध दुहना । देव, ब्राह्मण और गुरुओंका मंदिर ये सब स्वप्नमें दीखना शुभहै । तथा स्वप्नमें जलसे अभिषेकका देखना राज्यदाता है ॥

राष्ट्रेऽभिषेकश्च तथा छेदनं शिरसोऽपि च ॥ १०६ ॥
मरणं वह्निलाभश्च वह्निदाहो गृहादिषु ।
तथोदकानां तरणं तथा विषमलंघनम् ॥ १०७ ॥
हस्तिनीवडवानां च गवाञ्च प्रसवो गृहे ।
आरोहणं गजेन्द्राणां रोदनं च तथा शुभम् ॥१०८॥

अर्थ–राज्यमें अभिषेक, मस्तकका कटना, मरण, अग्निका मिलना तथा अग्निसे घरका फूँकना जलाशयोंका तरण और विषमस्थान (खाई, गड्ढा) आदिका फांदना, हथिनी, घोडी और गौका घरमें ब्याना (अर्थात् बच्चा देना) हाथीपर बैठना तथा स्वप्नमें रुदन करना शुभ है॥

परस्त्रीणां तथा लाभास्तथालिंगनमेव च ।
निगडैर्बंधनं चैव तथा विष्ठानुलेपनम् ॥ १०९ ॥
जीवानां भूमिपालानां सुहृदामपि दर्शनम् ।
शुभान्येतानि प्रोक्तानि राज्यलाभकराणि च ११०॥

अर्थ–परस्त्रियोंका लाभहोना, तथा परस्त्रियोंका आलिंगन करना हाथपैरोंमें बेडियोंका बंधन तथा विष्ठाका देहमें लेप होना शुभजीव राजा और सुहृदोंका दर्शन होना ये संपूर्ण स्वप्न शुभ राज्यलाभकारी हैं ॥

आचारमयूखे ।

आरोहणं गोवृषकुंजराणां प्रासादशैलाग्रवनस्पतीनाम । विष्ठानुलेपो रुदितं मृतं च स्वप्नेष्वगम्यागमनंप्रशस्तम् ॥ १११ ॥

अर्थ–स्वप्नमें गौ, बैल, हाथी, मंदिर, पर्वत, वनस्पती (वृक्ष) इनपरचढना, विष्ठाका लेप होना, रुदन करना, मरा हुआ देखना और अगम्या (बहन, बेटी आदि) से गमन करना उत्तम कहा है ॥

क्षीरिणं फलिनं वृक्षमेकाकी यः प्ररोहति ।
तत्रस्थः स विबुध्येत धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ॥ ११२ ॥

अर्थ–दूधवाले फलित वृक्षपर अकेला चढे और उसी जगे यदि जागपरे तो शीघ्र धनकी प्राप्ति होवे ॥

यस्य श्वेतेन सर्पेण ग्रस्तश्चेद्दक्षिणः करः ।
सहस्रलाभस्तस्य स्यादपूर्णे दशमे दिने ॥ ११३ ॥

अर्थ–स्वप्नमें जिस प्राणीके दहने हाथको श्वेत सर्प काटे, उसको दशदिनके भीतर एक सहस्र १००० रुपयोंका लाभ होय ॥

उरगो वृश्चिको वापि जले ग्रसति यं नरम् ।
विजयं चार्थसिद्धिं च पुत्रं तस्य विनिर्दिशेत्॥११४॥

अर्थ–जिस प्राणीको स्वप्नमें सर्प बिच्छू जलमें डसे उसकी विजयकी धनकी और पुत्रकी प्राप्ति कहनी चाहिये ॥

प्रासादस्थस्तु यो भुंक्ते यो वा तरति सागरम् ।
अपि दासकुले जातः स राजा नियतं भवेत्॥११५॥

अर्थ–स्वप्नमें महलपर बैठकर भोजनकरे और जो समुद्रके पार होजाय वह यदि दासकुलमें भी उत्पन्न हुआ हो तोभी निश्चय राजा होय॥

यस्तु मध्ये तडागस्य भुंक्ते च घृतपायसम् ।
अखण्डे पुष्करे पत्रे तं विद्यात्पृथिवीपतिम् ॥११६॥

अर्थ- जो प्राणी स्वप्नमें तालाबके बीचमें बैठकर साबत कमलके पत्ते पर घृत और खीरका भोजन करे उसको राजा जानना चाहिये ॥ अर्थात् राजा होय ॥

बलाकां कुक्कुटीं क्रौंचीं दृष्ट्वा यः प्रतिबुध्यति।
कुलजां लभते चान्यां भार्यां च प्रियवादिनीम् ११७

अर्थ–जो प्राणी स्वप्नमें बगली, मुरगी क्रौंची पक्षीको देखकर जगे तो उसको प्रिय बोलनेवाली कुलवान् भार्याकी प्राप्ति होय।

नागपत्रं लभेत्स्वप्ने कर्पूरमगरुं तथा।
चंदनं पाण्डुरं पुष्पं तस्य श्रीः सर्वतोमुखी॥ ११८॥

अर्थ–जिस मनुष्यको स्वप्नमें पान, कपूर अगर, चंदन और पीला फूल मिले उसको धनकी प्राप्ति होय॥

क्षीरं पिबति यः स्वप्ने सफेनं दोहने कृते।
सोमपानं भवेत्तस्य भोक्ता भोगाननेकशः॥११९॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें दुहाहुआ झागसहित दूध पीता है उसको यज्ञके सोमपानकी प्राप्ति हो और अनेक भोगोंको भोगे॥

दधि दृष्ट्वा भवेत्प्रीतिर्गोधूमांश्च धनागमः।
यवान्यज्ञागमं विद्याल्लाभः सिद्धार्थकानपि॥१२०॥

अर्थ–स्वप्नमें दही देखनेसे सर्वप्राणियोंको प्रियहोय। गेहूं देखनेसे धनकी प्राप्ति और यव देखनेसे यज्ञका आगम अर्थात् यज्ञ होय और पीलीसरसोंके देखनेसे लाभ होय॥

रथं गोवृषसंयुक्तमेकाकी यः प्ररोहति।
तत्रस्थः स विबुध्येत धनं शीघ्रमवाप्नुयात्॥ १२१॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें बैलजुडेहुये रथमें अकेला बैठता है और उसीसमय नींद खुलजावे तो शीघ्र धनकी प्राप्ति होय॥

दधिलाभे भवेदर्थो घृतलाभे ध्रुवं यशः।
घृतं भक्षेद्ध्रुवं क्लेशो यशस्तु दधिभक्षणे॥ १२२॥

अर्थ-स्वप्नमें दहीकी प्राप्ति होनेसे धनकी प्राप्तिहो, घृतके मिलनेसे यश होय और स्वप्नमें घृतके खानेमे क्लेश होय और दही खानेमे यशप्राप्ति होय ॥

बृहस्पतिः ।

मानुषस्य तु मांसानि यस्तु स्वप्नेषु भक्षयेत् ।
अपक्वान्येव सर्वाणि शृणु तस्य तु यत्फलम् १२३॥

अर्थ-बृहस्पति लिखते हैं कि जो मनुष्य स्वप्नमें मनुष्यके अपक्व मांसको भक्षण करताहै उसके प्रत्येक अंगका मैं फल कहता हूं तू सुन॥

पादे पञ्चशतं लाभः सहस्रं बाहुभक्षणे ।
मस्तकाशनतो राज्यं मंत्रिता हृदयाशनात्॥१२४॥

अर्थ-पैरका मांस खानेसे ५०० रुपयेकी प्राप्तिहो । एवं भुजाके मांस भक्षणसे (१०००) हजार रुपयेकी प्राप्ति, मस्तक भक्षणसे राज्य प्राप्ति और हृदयके मासको स्वप्नमें खानेसे मंत्री होय ॥

उपानहौ ध्वजं चक्रं लब्ध्वा यस्तु विबुध्यते ।
असिं वा निर्मलं तीक्ष्णमध्वानं तस्य निर्दिशेत्१२५

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें जूताजोडी ध्वजा, चक्र, निर्मल और तीक्ष्ण तलवारको प्राप्त होकर और उसी समय जागपडे उसको मार्ग चलना पडेगा ऐसा जानना ॥

नावमारोहयंश्चस्तु नदीं वा विपुलां तरेत् ।
प्रवासो नियतस्तस्य शीघ्रमागमनं पुनः ॥१२६॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें नौकापर बैठ बडी भारी नदीको तरताहै वह अवश्य परदेशको जायगा और उस जगेसे शीघ्र आगमन होय ॥

पीताम्बरधरानारी पीतमाल्यानुलेपना ।
अवगूहति यं स्वप्ने कल्याणं लभते हि सः ॥ १२७ ॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें पीलेवस्त्र और पीले चंदन फूलमालाके धारण करनेवाली स्त्रीका आलिंगन करना देखे तो वो कल्याणको प्राप्त होता है ॥

श्वेताम्बरधरा नारी श्वेतमाल्यानुलेपना ।
अवगूहति यं स्वप्ने तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ॥ १२८ ॥

अर्थ–उसीप्रकार सपेदवस्त्र सपेदचंदन तथा सपेद फूलमालाके धारण करनेवाली स्त्री जिसको स्वप्नमें आलिंगन करे, उसका चारोंतर-फसे लक्ष्मीका आगमन होय ॥

सर्वाणि शुक्लान्यतिशोभनानि कार्पासभस्मौ-
दनतक्रवर्ज्यम् । सर्वाणि कृष्णान्यतिनिन्दिता-
नि गोहस्तिदेवद्विजवाजिवर्ज्यम् ॥ १२९ ॥

अर्थ–स्वप्नमें कपास, भस्म (राख), भात, और छाछको त्यागकर संपूर्ण सपेद वस्तु शुभकारी हैं । और गौ, हाथी, देव, ब्राह्मण और घोडा इनको परित्यागकर संपूर्ण कृष्णवस्तु स्वप्नमें देखना अशुभ है ॥

देवा द्विजास्तथा गावः पितरो लिंगिनो नृपाः ।
यद्वदन्ति नरं स्वप्ने तत्तथैव भवेद्ध्रुवम् ॥ १३० ॥

अर्थ–देव, ब्राह्मण, गौ, पितर, विरक्तपुरुष और राजा ये स्वप्नमें जो बात कहें वो उसीप्रकार होय, इसमें संदेह नहीं ॥

आसने शयने याने शरीरे वाहनेऽपि वा ।
ज्वलमाने विबुध्येत तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ॥ १३१ ॥

अर्थ—जो मनुष्य आसन, शय्यापर, सवारीमें, देहमें और वाहन (घोडा हाथी आदि) में अपनेको पजरता देखे और उसी वक्त जागपरे तो उसको चारों तरफसे लक्ष्मीकी प्राप्ति होय ॥

वडवां कुक्कुटीं दोलां लब्ध्वा यस्तु विबुध्यते ।
सकामां लभते भार्यां सुभगां प्रियवादिनीम् १३२॥

अर्थ—जो मनुष्य स्वप्नमें घोडी मुर्गी और हिंडोला इनको प्राप्तहो जागपरे तो वह सकामा और प्रियबोलनेवाली ऐसी स्त्रीको प्राप्त होवे ॥

निगडैर्बध्यते यस्तु पाशैर्वा बध्यते भृशम् ।
सुपुत्रो जायते तस्य सुप्रतिष्ठां च विंदति ॥ १३३ ॥

अर्थ—जो मनुष्य स्वप्नमें बेडी और फांसोंसे बँधजावे उसके सुन्दर पुत्र होय और उत्तम प्रतिष्ठाको प्राप्त होताहै ॥

पराशरसंहितायाम् ।

स्वाङ्गप्रज्वलनं परोपशमनं शक्रध्वजालिंगकृत्
संयुक्तोऽपि नरैर्विपत्य च विपत्प्रक्षेपणं दिक्षु च ॥
बद्धो वा निगडैर्ग्रसेच्च दहनं नारीक्षितो बाहुना
छत्रं वा द्विरदादिरोहणविधौ दिव्योऽपि च ब्राह्मणः ॥ १३४ ॥

अर्थ—पराशरसंहितामें लिखा है कि, स्वप्नमें अपने अंगोंको फूकता देखना, शत्रुको जीतना, बिजलीको छूना, विपत्तिमेंभी विपत्तिका पडना, दिशाओंमें फेकना, पैरोंमें बेडी पडना, अग्निको ग्रसना, भुजाओंसे शत्रु-दमन, छत्र और हाथीपर बैठना तथा दिव्य ब्राह्मणका दर्शन होना ॥

दिनकरशशिताराभक्षणस्पर्शनानि विशरण-
मपि मूर्ध्नः सप्तपञ्चत्रिधा वा । वृषभगृहनरेन्द्र-

श्वेतसिंहाधिरोहणसनमुदधिभूमौ भूमिराज्यप्रदानि ॥ १२५ ॥

अर्थ–सूर्य चंद्र, तारागणोंका भक्षण करना मस्तकके सात, पांच अथवा तीन टूक होना, बैल, घर, राजा, इनका दर्शन, सपेद सिंहासन पर बैठना तथा समुद्र और पृथ्वीको ग्रस लेना इत्यादि स्वप्न पृथ्वीके राज्यदाता है ॥

विपुलरणविमर्दद्यूतवादेर्जयश्च पशुमृगमनुजानां लब्धिरध्यासनं वा । विवसनपरिलेपोगम्यनारीगमो वा स्वमरणशिखिलाभःस्स्यसंदर्शनं च १२६॥

अर्थ–स्वप्नमें बड़ाभारी रण, जुआ और वादमें जीत होना, तथा पशु, मृग और मनुष्योंकी प्राप्ति तथा सिंहासनकी प्राप्ति, दिव्यवस्त्रोंका पहरना और चंदनादिका लगाना एवं अगम्यास्त्रीसे गमन, अपना मरण देखना अग्निकी प्राप्ति और हर्षादिरी नामका देखना ॥

सितसुरभिमनोज्ञालेपमाल्यांबराणां द्विजसुरगुरुराज्ञां दर्शनं चाशिषश्च । मणिरजतसुवर्णाम्भोजपात्रेषु भुंक्ते घृतदधिपरमान्नं सर्वमेतच्छुभश्च॥ १२७॥

अर्थ–सुंदर सुगंधित सपेद चंदन आदिका लेप और फूलमाला तथा वस्त्रका धारण करना ब्राह्मण देवता राजा इनका दर्शन होना, तथा आशीर्वाद देना, तथा मणि, चांदी, सुवर्ण और कमल आदिके पात्रमें घी, दही, खीरका भोजन इत्यादि स्वप्न देखना शुभ है ।

निष्फल स्वप्न ।

यथास्वं प्रकृतिस्वप्नो विस्मृतो विहतश्च यः । चिन्ताकृतो दिवा दृष्टो भवन्त्यफलदास्तुते॥ १२८॥

अर्थ-यथा प्रकृतिके अनुसार अर्थात् जैसी जिसकी वातपितादिक प्रकृति ऐसा स्वप्न और जो स्वप्न देखा हो उसकी याद भूलगई हो और जो विहत हो (अर्थात् प्रथम दुष्ट स्वप्न देखे फिर उसके पिछाडी शुभस्वप्न देखे) और जो चितवन कराहुआ तथा दिनका देखा ये स्वप्न निष्फल हैं ॥

तथाच ।

आयुस्तृतीयभागे शेषे पतितः प्रकीर्त्तितः स्वप्नः । अतिहासशोककोपोत्साहजुगुप्साभयाद्गणोत्पन्नः ॥ वितथः क्षुधापिपासामूत्रपुरीषोद्भवः स्वप्नः ॥ १३९ ॥

अर्थ-अत्यंत वृद्धावस्थाका स्वप्न, अत्यंत हास्य, शोक, कोप, उत्साह, निंदा, भय इनकारणोंसे तथा जो भूख, प्यास और मूत्रमलकी बाधामें स्वप्न दीखे वो निष्फल है ।

प्रकृतिजन्यस्वप्न ।

वाताधिकोऽभ्रं भ्रमतीतिपश्येत्कृष्णानि वर्णानि प्रचंडवातम् । पित्ताधिके कांचनरत्नमाल्यदिवाकराग्निज्वलनानि पश्येत् ॥ १४० ॥ श्लेष्माधिकश्चन्द्रभशुक्लपुष्पसरित्सरोम्भोनिधिलंघनानि । काले मरुत्पित्तकफप्रकोपः साधारणं स्याद्बलसन्निपातात् ॥ १४१ ॥

अर्थ-जिसप्राणीकी वातप्रकृति होतीहै वो आकाशमें भ्रमण करे, तथा काले रंगके पदार्थोंको देखे तथा प्रचंड पवन (आँधी) को देखता है । पित्ताधिक प्रकृतिवाला मनुष्य सुवर्ण और रत्नोंकी माला, सूर्य, अग्नि और प्रकाशवान् पदार्थ (बिजली आदि) को देखे । कफाधिक प्रकृतिवाला मनुष्य चंद्रमाके तुल्य सपेद पुष्प, सरोवर, नदी, समुद्रको

तरना इत्यादि स्वप्न देखे और मिश्रित प्रकृतिवाले मनुष्य मिश्रित स्वप्नको देखते हैं ।

स्वप्नस्य प्रहरपरत्वेन फलम् ।

स्वप्नस्तु प्रथमे यामे संवत्सरविपाकिकः ।
द्वितीये चाष्टभिर्मासैस्त्रिभिर्मासैस्तृतीयके ॥१४२॥
चतुर्थयामे यः स्वप्नो मासेन फलदः स्मृतः ।
अरुणोदयवेलायां दशाहेन फलं भवेत् ॥ १४३ ॥
गोविसर्जनवेलायां सद्य एव फलं भवेत् ॥ १४४॥

अर्थ-रात्रिके प्रथम प्रहरका देखाहुआ स्वप्न १ वर्षमें फल देताहै । दूसरे प्रहरका स्वप्न आठ महीनेमें फल देय । तीसरे प्रहरका स्वप्न तीन महीनेमें और रात्रिके चतुर्थ प्रहरमें देखाहुआ स्वप्न १ महीनेमें अपना शुभाशुभ फल करे । और जो अरुणोदय (भोरकाले) स्वप्न देखाहो वह दशदिनमें फल करे । उसीप्रकार गो छोडनेके समय देखाहो वह उसीसमय फल देता है। परंतु जो मनुष्य जिससमय जागता है उसको उसीसमयका देखाहुआ फल देता है ॥

स्वप्नदर्शनविधिः ।

दुकूलमुक्तामणिभिर्नरेन्द्रः सामंतदैवज्ञपुरोहिताश्च । तद्देवतागारमनुप्रविश्य प्रवेशतस्तत्र दिगीश्वरं च ॥ १४५ ॥ अभ्यर्च्य मंत्रैस्तु पुरोहितस्तु संयम्य तस्यां भुवि संयतात्मा । ब्राह्मीशपूर्वामथ भागपुष्पं कृत्वोपधानं शिरसि क्षितीशः । तथैकभुग्दक्षिणपार्श्वशायी स्वप्नं परीक्षेत यथोपदेशम् ॥ १४६ ॥

अर्थ-अब स्वप्न देखनेकी विधि कहते हैं कि-राजा, वस्त्र मोती मणिको ले और सामंत (सूबेदार) ज्योतिषी, पुरोहित इनको साथले देवताके मंदिरमें जाय और उस जगे गंध पुष्प धूप दीप, नैवेद्य तथा वस्त्र रत्नादिकसे मंत्रपाठपूर्वक इष्टदेवका पूजन करे। फिर उसराजाका पुरोहित इन्द्रियोंको जीत उसी मंदिरके पूर्वकी ओर अथवा ईशानकी ओर विस्तराकरके और पुष्पोंको तथा सुगंधित वस्तुको अपने सिराने धरके सोवै, उसीप्रकार स्वयं राजा एकवार भोजन करे और दहनी करवट सोवे, इसप्रकार यथोपदेश उस मंदिरमें स्वप्नकी परीक्षा करे॥

शयनसमये स्मरणीयो मनुः।

नमः शम्भो त्रिनेत्राय रुद्राय वरदाय च। वाम-
नाय विरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः॥ १४७॥
भगवन्! देवदेवेश! शूलभृद्वृषवाहन!॥ इष्टा-
निष्टे ममाचक्ष्व स्वप्ने सुप्तस्य सांत्वनः॥ १४८॥

अर्थ-जिस समय मंदिरमें सोवे उससमय "नमः शंभो त्रिनेत्राय०" इस मंत्रको जपे, इसका यह अर्थ है कि-त्रिनेत्र, रुद्र, वरद, वामन, विरूप, स्वप्नाधिपके अर्थ नमस्कार है. हे भगवन! हे देवदेवेश! हे शूलके धारणकर्ता! हे वृषवाहन! निद्रामें मुझको निरंतर इष्ट और अनिष्ट भवितव्यको कहो॥

एकवस्त्रः कुशास्तीर्णे सुप्तः प्रयतमानसः।
निशान्ते पश्यति स्वप्नं शुभं वा यदि वाऽशुभम्॥१४९

अर्थ-स्वप्नदेखनेकी इच्छावाला पुरुष एकवस्त्रको धारणकर कुशाके आसनपर मनको एकाग्रकर शयन करे, इसप्रकार करनेसे उसप्राणिको रात्रिके अंतमें जैसा कुछ शुभाशुभ भवितव्य हो वैसा स्वप्न दीखे॥

एतत्पवित्रं परमं पुण्यदं पापनाशनम् ।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय दुःस्वप्नं तस्य नश्यति ॥ ४

अर्थ–परमपवित्र पुण्यदायक और पापनाशक इस "स्वप्नप्रकाशि ग्रंथको प्रातःकाल उठकर जो पाठ करता है उसप्राणीका दुःस्व हुआ नष्टहो और शुभफलकी प्राप्ति हो ॥

इति श्रीमदायुर्वेदोद्धारकमाथुरकृष्णलालात्मजन दत्तरामेण निर्मित स्वप्नप्रकाशिका नाम त्रयस्त्रिंशस्तरंगः ॥ ३३ ॥

इति स्वप्नप्रकाशिका भाषाटीका समाप्ता ।



पुस्तक मिलनेका पता–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) प्रेस–मुंबई.